

# श्री-सम्प्रदाय के आचार्य विश्वक्सेन



जिस प्रकार संसार में कार्य चलाने के लिये मनुष्यों को सहायकों की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार सृष्टि के पालनकर्ता श्रीहरि को भी अपना कार्य करने के लिए सहायकों की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रयोजन से श्रीहरि के भी मुख्य 16 पार्षद यानी सहायक हैं, जिनको समय-समय पर समाज को सार्थक संदेश देने के लिए श्रीहरि पृथ्वी पर भेजते रहते हैं। मान्यता है कि आज भी उनमें से कुछ पृथ्वी पर भ्रमण करते हैं और श्रीहरि के भक्तों को संकटों से बचाते हैं, धर्म पथ पर चलाते हैं। वे निर्दिष्ट कार्य करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। सबकी अपनी-अपनी भूमिकाएं हैं, जिन्हें वे पूरी निष्ठा के साथ निभाते हैं। इनके नाम हैं – विश्वक्सेन, जय, विजय, प्रबल और बल। इनके बारे में माना जाता है कि ये भक्तों का मंगल करते हैं और श्रीहरि के प्रति शत्रु भाव रख कर भी उनकी लीला में सहयोग करते हैं। जैसे कुंभकर्ण व रावण, श्रीहरि के जय व विजय नामक पार्षद ही थे। नन्द, सुनन्द, सुभद्र, भद्र के बारे में कहा जाता है कि ये रोगों को नष्ट करते हैं। चंड, प्रचंड, कुमुद और कुमुदाक्ष श्रीहरि के भक्तों के लिए परम विनीत व अति कृपालु बन कर सेवा करते हैं। शील, सुशील व सुषेण श्रीहरि के भावुक भक्तों का बराबर ध्यान रखते हैं।

ये सोलह पार्षद श्रीहरि की सेवा में बड़े ही कुशल हैं और इसी कारण माना जाता है कि नारायण के पास इनकी सेवा से जल्दी पहुंचा जा सकता है। जैसे श्रीहरि हैं, वैसे ही उनके ये 16 पार्षद भी हैं। केवल श्रीहरि के वक्ष स्थल पर श्रीवत्स और गले में कौस्तुभ मणि पार्षदों के पास नहीं होती। जहां-जहां हरि बोल, नारायण-नारायण बोला जाता है, वहां-वहां ये पार्षद पहुंच जाते हैं। श्रीहरि की भक्ति प्राप्त करने में जुटे भक्तों को इन सभी पार्षदों का भी नाम स्मरण करना चाहिए। पापी अजामिल को 'नारायण-नारायण' करने पर इन पार्षदों ने ही यम पाश से छुड़ाया था। सभी पार्षद श्रीलक्ष्मीनारायण की सेवा करके उन्हें प्रसन्न करने में बहुत चतुर हैं। वे सभी भजन में आनंद पाने वाले भक्तों का हित करते हैं। भगवान के सभी पार्षद स्वभाव से ही सिद्ध और नित्यमुक्त हैं। वे सदा भगवान् के ध्यान में मग्न रहते हैं। प्रेमभाव से पूर्ण दृष्टिकोण से भक्तों का पालन करते हैं।

विश्वक्सेन कलयुग के श्री सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य :

श्री सम्प्रदाय की गुरु परम्परा भगवान् श्रीमन्नारायण से प्रारंभ होती है। भगवान् श्रीमन्नारायण अपनी अकारण निर्हेतुक कृपा से, इस भौतिक जगत से बद्ध जीवात्मा (अर्थात् जीवों) का उद्धार करने कृत संकल्प लिये हुये हैं। जीवात्मा को शुद्ध बुद्धि, और चिरस्थायि सुखदायक आनन्दमय जीवन, भौतिक देह के त्याग के बाद (यानि परमपद में भगवद्-कैकर्य) प्रदान करने की जिम्मेदारी स्वयं ले रखी है। असंख्य कल्याण गुणों से परिपूर्ण एम्पेरुमान (भगवान् श्रीमन्नारायण – श्रियःपति अर्थात् श्रीमहा-

लक्ष्मीजी के पति), श्री वैकुण्ठ में अपनी देवियों (माता श्रीदेवी, भूदेवी, नीलादेवी) के साथ बिराजमान हैं, जहाँ सदैव नित्य-सूरी (गरुडाळ्वार, विश्वक्सेनजी, अनन्तशेषजी) इत्यादि भगवान की नित्य सेवा में लीन है। इन अनुयायियों की मान्यता है कि भगवान् नारायण ने अपनी शक्ति श्री (लक्ष्मी) को अध्यात्म ज्ञान प्रदान किया। तदुपरांत लक्ष्मी ने वही अध्यात्म ज्ञान विश्वक्सेन को दिया। वे विष्णु जी के निर्मालयधारी कहे जाते हैं।

विश्वसेना को संस्कृत में व्वक्सेन कहा जाता है। विश्वसेना, जिसे सेनाई मुदलवार (सेना मुदलियार) और सेनाधिपति (सेना-प्रमुख) के नाम से भी जाना जाता है। वे हिंदू देवता विष्णु की सेना के कमांडर-इन-चीफ हैं। वैकुण्ठ के अपने दिव्य निवास के द्वारपाल और कक्ष के रूप में सेवा करते हैं। तंत्र के अवतार के रूप में, वैखानस और श्री वैष्णववाद में किसी भी अनुष्ठान या समारोह से पहले विश्वक्सेन की पूजा की जाती है। संप्रदाय उनका वैखानस और पंचरात्र मंदिर परंपराओं में एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहां मंदिर उत्सव अक्सर उनकी पूजा और जुलूस के साथ शुरू होते हैं।

विश्वक्सेन का प्रतिमा विज्ञान :-

विश्व ब्रह्मांड या संपूर्ण सृष्टि है और सेना सेना है। जिस प्रकार ब्रह्मांड के हर कोने और कोने में भगवान की सेना है, वे विश्वक्सेन हैं। कूर्म पुराण में विश्वक्सेन का वर्णन विष्णु के एक हिस्से से हुआ है, जो एक शंख (शंख), सुदर्शन चक्र (डिस्कस) और गदा (गदा) लेकर और अपने गुरु की तरह पीले कपड़े पहने हुए हैं। कालिका पुराण में उन्हें विष्णु के परिचारक के रूप में वर्णित किया गया है, जिनकी चार भुजाएं हैं, और उनका रंग लाल और भूरा है। वह सफेद कमल पर विराजमान है, लंबी दाढ़ी रखता है और उलझे हुए बाल पहनता है। उनके हाथों में कमल, गदा, शंख और चक्र हैं। पंचरात्र पाठ लक्ष्मी तंत्र में विश्वक्सेन को चार भुजाओं वाला और एक शंख और कमल धारण करने का उल्लेख है। एक अन्य उदाहरण में, कहा जाता है कि वह एक तलवार और एक क्लब ले जाता है, पीले कपड़े पहनता है और उसकी आंखें, दाढ़ी और भौहें और चार दांत होते हैं। एक भजन में, टिप्पणी यह है कि विश्वक्सेन में विष्णु के सभी गुण हैं, जिसमें श्रीवत्स चिह्न और उनके हथियार शामिल हैं। तिरुमाला वेंकटेश्वर मंदिर के विश्वसेना प्रतीक के चार हाथ हैं और उनके ऊपरी हाथों में एक शंख (शंख) सुदर्शन चक्र (डिस्कस) है और उनके निचले हाथ जांघ (गडा हस्त) और अवगण हस्त में हैं।

विश्वक्सेन वेदों या धर्म शास्त्र ग्रंथों में प्रकट नहीं होते हैं, लेकिन उनकी पूजा का उल्लेख पंचरात्र और अन्य आगम ग्रंथों में मिलता है। विश्वसेना को पवित्र आगम शास्त्रों का प्रतीक माना जाता है। विश्वक्सेन के पास काम के बाद के हिस्से में उन्हें समर्पित एक तानिया भी है, जिसमें उन्हें विष्णु की पत्नी लक्ष्मी से शुरू होने वाले पारंपरिक श्री वैष्णव गुरु परम्परा (शिक्षकों और शिष्यों के उत्तराधिकार) की सूची में शामिल किया गया है। (श्री) से नम्मालवर। यह श्री वैष्णववाद पर पंचरात्र ग्रंथों के प्रभाव को इंगित करता है। रामायण में, यह उल्लेख किया गया है कि त्रेता युग में राम (जो विष्णु के अवतार थे) की मदद करने वाली वानर सेना के प्रमुख सुग्रीव विश्वक्सेन के अवतार थे।

कूर्म पुराण में एक शापित भिक्षुक या भिखारी (भिक्षाटन, भैरव का एक रूप) के रूप में भगवान शिव की वैकुण्ठ की यात्रा का वर्णन है। वैकुण्ठ द्वार पर विश्वसेना का पहरा था, जिन्होंने शिव को नहीं पहचाना और उन्हें प्रवेश नहीं करने दिया। भैरव ने अपने भयानक परिचारक कलावेग को विश्वक्सेन से युद्ध करने का आदेश दिया। हालांकि, कलावेग को विश्वसेना ने हराया था। जैसे ही विश्वक्सेन ने भैरव की ओर

आरोप लगाया, भैरव ने स्वयं विश्वकसेन को अपने त्रिशूल से मार डाला और अपनी लाश को उस पर लाद दिया। भैरव के इस रूप को कंकल या कंकलमूर्ति (“कंकाल वाला एक”) के रूप में जाना जाता है।

विश्वकसेन की पूजा :-

विश्वकसेन वैष्णववाद के वैखानस संप्रदाय में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है , जो विष्णु को समर्पित एक संप्रदाय है। किसी भी कर्मकांड या समारोह की शुरुआत विश्वासेन की पूजा से होती है। भगवान विष्णु के पार्षदों में इनका वही स्थान है जो शिव के गानों में गणेश जी का स्थान है। भगवती श्री लक्ष्मी ने इन्हीं को श्री नारायण मंत्र की दीक्षा दी थी। माना जाता है कि विष्णु की सेना के सेनापति के रूप में, उन्हें अनुष्ठान या कार्य को बाधाओं और बुराई से बचाने के लिए माना जाता है। श्री वैष्णववाद में , उन्हें “कठिनाइयों को दूर करने वाला” और चंद्रमा के समान चमकदार रंग के वाहक के रूप में वर्णित किया गया है। रामानुज टिप्पणी करते हैं कि वैष्णव कार्तिकेय और गणेश के स्थान पर विश्वकसेन की पूजा करते हैं।